करकंडु चरिउ का परिचय | U.G Sem-2

मुनि कनकामर (1065) द्वारा रचित करकंडु चरिउ अपभ्रंश भाषा में रचित प्रसिद्ध चरित काव्य की परम्परा की महत्वपूर्ण कड़ी है। यह काव्य 10 संधियों में रचा गया है।

इसकी कथानक महाराज करकंडु के जीवन चरित पर आधारित है। इस चरित्र काव्य की सबसे बड़ी विशेषता कि यह श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों सम्प्रदायों में मान्य है। कवि ने इस ग्रंथ की रचना जैन धर्म की महत्ता दर्शाने के लिए की है क्योंकि कवि ने जैन धर्म के अंतर्गत होने वाली आचार सदाचार युक्त जीवन को ही प्रस्तुत किया है जिससे साधारण जनता में जैन धर्म का विकास सरलता से हो सके। इसके साथ-साथ पंचकल्याण विधि का महत्व भी इस कृति में प्रदर्शित है।

चम्पा के राजा के पुत्र है करकंडु उनके हाथ में निरंतर खुजली होती

NOTES :

APPOINTMENTS :

PHONE/E-MAIL :

होने कारण उसका नाम करकंडु पड़ा। करकंडु का जन्म विचित्र परिस्थितियों में होता है। युवा होने पर वह दन्तपुर के राजा बन जाता है। उनका विवाह मदनावलि नामक राजकुमारी के साथ होता है। परन्तु पूर्व जन्म के सर्प के स्त्री श्राप के कारण मदनावलि को विद्याधर हर ले जाते हैं। पत्नी के वियोग में करकंडु बहुत दुःखी होता है। वह उसे ढूंढने निकलता है, परन्तु दुर्भाग्यवश एक विद्याधर द्वारा वह हर लिया जाता है जहाँ उन्हें उसकी पुत्री रतिवेगा से विवाह करना पड़ता है। रतिवेगा के साथ लौटते समय पुनः मगरमच्छ के आक्रमण के कारण वे एक दूसरे से अलग हो जाते हैं। जहाँ करकंडु को एक विद्याधरी पकड़ ले जाती है। और अपनी पति के रूप में वर ले लेती है तथा पुनः पत्नि सहित वापस लौटने पर करकंडु चोल चेर आदि राजाओं से युद्ध करते परन्तु जिन की प्रतिमा की दर्शन होने पर वे उनका राज्य वापस लौटा देते हैं। सुखमय जीवन व्यतीत करते हुए उनके राज्य में एक मुनि का आगमन होता है। उनसे अपने जन्म-जन्मांतर

APPOINTMENTS :

PHONE/E-MAIL :

Scanned with OKEN Scanner

FEBRUARY

WK	S	M	T	W
06	1	2	3	4
07	8	9	10	11
08	15	16	17	18
09	22	23	24	25

की कथा जानकर उन्हें वैराग्य उत्पन्न हो जाता है और वे सम्पूर्ण राज्य को अपने बेटे को सौंपकर रानियों सहित तपस्या करके ज्ञान और मोक्ष को वरण करते है।